International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 1, Jan.-Feb., 2024, Impact Factor: 8.376

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और इतिहास

डॉ. सावित्री परिहार[1], श्रीमती प्रभा चौहान[2]

[1]शोध निर्देशिका–
[2]शोध कर्ता–

सारांश

हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केन्द्रित किया है तथा शिक्षा का स्वरूप व्यावहारिकता को प्राप्त करने योग्य जीवन के लिए सहायक है। संपूर्ण वैदिक वाग्मय– रामायण, महाभारत, पुराण स्मृति ग्रंथ, दर्शन, धर्म ग्रंथ, काव्य, नाटक, व्याकरण तथा ज्योतिष शास्त्र. संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध होकर इनकी महिमा को बढ़ाते हैं, जो भारतीय सभ्यता, संस्कृति की रक्षा करने में पूर्णतः सिद्ध होती है। सुसंस्कृत ज्ञान से ही संस्कारवान समाज का निर्माण होता है। संस्कारों से कायिक, वाचिक, मानसिक पवित्रता के साथ पर्यावरण भी स्वच्छ होता है।

बदलते सामाजिक परिवेश और भारतीय मूल्यों के बीच हमारी शिक्षा व्यवस्था को समावेशी बनाना अत्यावश्यक है। यह समावेशी व्यवस्था भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा को लिये बिना नहीं चल सकती है, क्योंकि एक तरफ तो हम आधुनिकता के दौर की ओर तेजी से अग्रसर हैं, वहीं हमारी संस्कृति में निहित ज्ञान विज्ञान परंपरा को भूलते जा रहे है। इस अंधानुकरण में हमारी वही स्थिति हो चुकी है जैसा कि उपनिषदों में कहा गया है कि यदि दृष्टिहीन को रास्ता दिखाने वाला भी दृष्टिहीन हो तो लक्ष्य की प्राप्ति कठिन हो जाएगा।

भारत वर्ष ज्ञान भूमि से अलंकृत है जो आधुनिक युग के विज्ञान से भी परे है। जो समस्त ज्ञान प्रेमियों के लिए शोध का विषय है। अब समय है भारत के द्वारा विश्व को दिये गये ज्ञान को संजो कर इसका संवर्धन किया जाए और भारत वर्ष के जनता को संस्कृति, पहचान और प्राप्त ज्ञान से जोड़ा जाए। तभी इसकी उपादेयता सिद्ध होगी।

मुख्य शब्दः– ज्ञान परंपरा,संस्कृति,सांस्कृतिक मूल्य।

प्रस्तावनाः–

प्राचीन काल की भारतीय ज्ञान परंपराएँ और संस्कृति मानवता को प्रोत्साहित करती रही हैं। पुराणों में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है। भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी, उज्जयिनी, काशी अदि विश्व प्रसिद्ध शिक्षा एवशोध के प्रमुख केन्द्र थे तथा यहां कई देशो के शिक्षार्थी ज्ञान अर्जन के लिए आते थे। प्राचीन भारतीय ज्ञान विज्ञान की गौरव मयी परंपरा समस्त जगत को आलोकित करने वाली है। संस्कृत भाषा में ज्ञान विज्ञान की महती श्रृखला है जो वर्तमान वैज्ञानिक जगत के लिए कुतुहल का विषय ही है। आज जहां एक ओर आधुनिक विज्ञान सम्मुन्नत अवस्थिति में दिखायी दे रहा है वहीं दूसरी ओर इसके दोष एवं नाकारात्मक प्रभाव भी दिखई दे रहे हैं। विज्ञान की प्रगति हर युग की आवश्यकता है किन्तु इसमें दूरदर्शिता ओर मानव कल्याण का भाव सर्वोपरि होना चाहिए। स्वदेशी विज्ञान आंदोलन के माध्यम से आधुनिक विज्ञान को प्राचीन भारतीय ज्ञान वैभव से जोड़ने का अनवरत प्रयास किया जा रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा जो वैदिक एवं उपनिषद काल में थी, वह बौद्ध और जैन काल में भी रही यह विभिन्न विश्वविद्यालयों की स्थापना और शिक्षा व्यवस्था से स्पष्ट परिलक्षित होता है|लेकिन इसका लोप विगत 200 से 300 वर्षों में हुआ है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में इसे भी उचित रूप में प्रतिबिम्बित करने की आवश्यकता है।

शोध का उद्देश्यः–

1.प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की आधुनिक भारतीय संदर्भ में उपादेयता सिद्ध करना।
2.राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में प्राचीन ज्ञान परंपरा की सार्थकता को प्रतिबिम्बित कराना।

परिकल्पनाः–

1. प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराएँ मानवता को प्रोत्साहित होगा।
2. प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की विलोपित प्रतिबिम्ब को परिलक्षित होगा।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की गौरव मयी परंपराः–

भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म, तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। त्रग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यो पर केन्द्रित होंकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मुल्यों पर जोर देती थी। वेदों में विद्या को मनुष्यता की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार किया गया था। शिक्षा प्रणाली ने सीखने और श्शारीरिक विकास दोनो पर ध्यान केन्द्रित किया। कर्म वही है जो बन्धनों से मुक्त करे। और विद्या वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए। इसके अतिरिक्त जो भी कर्म हैं वह सब निपुणता देने वाले मात्र हैं। शिक्षा के इस संकल्प को भारतीय परंपरा में अंगीकृत कर तद अनुरूप ही विश्वविद्यालयों और गुरूकुलों में शिक्षा दी जाती थी। घर, मंदिर, पाठशाला तथा गुरूकुल में संस्कार युक्त स्वदेशी शिक्षा दी जाती थी।

प्राचीन काल की ज्ञान परंपराएँ और प्रथाएँ मानवता को प्रोत्साहित करती थी। पुराण में ज्ञान को अप्रतिूम माना गया है। आचार्य यास्क निरूक्त में कहते हैं– '' नह्येषु प्रत्यक्षमस्तिअनुषेरतपससो वा''(निरूक्त 13.12) अर्थात् जो ऋषि या तपस्वी नहीं हैं वह मंत्रों के यथसार्थ ज्ञान को नहीं जान सकता|अतः जिस प्रकार पूर्व को जानने के लिए पूर्व की ओर ही गमन करना होता है, उसी प्रकार आर्ष प्रणीत सिद्धान्तों व सुत्रों को समझने के लिए उन्ही के अनुरूप चिंतन मनन के लिए अग्रसर होना होगा।

वैज्ञानिक और तार्किक चिंतन का परिणाम–

प्राचीन भारतीय सनातन ज्ञान परंपरा अति समृद्ध थी तथा इसका उद्देश्य धर्म अर्थ का मोक्ष को समाहित करते हुए व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करना था। जब सारा विश्व अज्ञान रूपी अंधकार में भटकता था तब सम्पूर्ण भारत के मनीषी उच्चतम ज्ञान का प्रसार करके मानव को पशुता से मुक्त कर, श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त कर सम्पूर्ण मानव बनाते थे।

''संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् देवाभागं यथा पूर्वे, सजनानां उपासते'' ऋग्वेद 10.191.2
''साथ चलने, एक स्वर में बोलने और एक दूसरे के मन को जानने वाला समाज ही अपने युग को बेहतर बनाने की सामर्थ्य से युक्त हो सकता है ओर ऐसे युग में जीने वाले स्वयं के लिए बेहतर वर्तमान और आने वाली पीढ़ीयों के लिए बेहतर भविष्य की संकल्पना करने वाले होते हैं|'' ऋग्वेद का यह मन्त्र हमें ऐसे ही सनातन दृष्टि को प्रदान करने वाला है ।

भारतीय ज्ञान परंपरा का भू–सांस्कृतिक और सभ्यतागत संदर्भः–

भारत भूमि की प्राचीनता, इसमें से उत्पन्न हुई सभ्यता ओर संस्कृति से स्थापित होती है। इस परिपव्रेक्ष्य में भारत भूमि की भौगोलिक जानकारी होना भी आवश्यक है। और इससे जुडी हुई है भारत की ज्ञान परंपरा। यह सभी विषय परस्पर जुड़े हुए हैं। भारतीय ज्ञान परंपराके मूल में विद्यमान भू– सांस्कुतिक और सभ्यतागत विशेषताओं का

पता लगाने और पहचरानने के लिए हमें किसी प्रामाणिक ऐतिहासिक या प्रागैतिहासिक, मौखिक या लिखित रूप में ससबसे पुराने उपलब्ध पाठ्य संदर्भ का पता लगाना होगा। यह तथ्य सर्वविदित है कि विभाजन पूर्व समय में भारत ने उत्तर पश्चिम में अपनी तात्कालीक भौगोलिक सीमाएँ अफगानिस्तान और इरान के साथ साझा की थी। लेकिन प्राचीन काल में इन राजनीतिक सीमाओं को आज की तरह चिन्हित नहीं किया गया था। प्रारंभ में भू– दृश्य कुछ भौगोलिक कारणों से अलग अलग थे, जैसे पहाड़ नदियाँ रेगिस्तान या जंगल आदि। यही कारण है कि एक विशिष्ट भौगोलिक रूप से चिन्हित सीमाओं के भीतर रहने वाले लोगों के दृष्टिकोण उनकी जीवन शैली, व्यवहार और सोचने एक सामान्य और विशिष्टता हासिल कर ली थी।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और इतिहास :–

प्राचीन काल से ही हमारा देश मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परंपराओं का देश रहा है। भारत की संस्कृति रही है कि भारत ने दुनिया को अलग अलग देश के रूप में माना ही नहीं है।'' अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतषाम् उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।'' महा उपनिषद के इस सिद्धंत के आधार पर भारत दुनिया को एक परिवार मानता है। यह अलग बात है किपाश्चात्य सभ्यता की आपाधापी मे हम भी यह गलती से समझने लगे कि यह सभ्यता भौतिक वाद पर टिकी है, न कि ज्ञान और आध्यात्म पर। इस सदी के उत्तरार्ध से पश्चिमी सभ्यता वाले देश भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अपनाने और जानने पर जोर देने लगे है। वेदों , उपनिषदों , स्मृतियों और यहां की जीवन शैली को जानने के लिए अपने यहां कई विभाग से लेंकर शोध संस्थाओं की स्थापना करने लगे है। भारत की परंपराओं को आज विश्व भी अपना रहा है। हमें और हमारी भावी पीढ़ियों को भी भारत की प्राचीन मूल्यों को यथोचित महत्व देना होगा। इसके लिए आंतरिक ज्ञान गुण शक्ति एवं आदर्शों को ठीक रूप से पहचानना एवं सही दिशा प्रदान करना होगा।

यह ज्ञान परंपरा अनादिकाल से चली आ रही है इस भूमि में देवता, सुर, असुर सभी तरसते हैंजन्म लेने के लिए, क्योकि यहां से स्वर्ग और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। निःसंदेह अक्षय ज्ञान परंपरा मानना अतिश्योक्ति नहीं होगी।

आधुनिक संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका–

यह भारत भूमि महान है। इस भूमि की ज्ञान की अविरल धारा ने सम्पूर्ण जगत को सींचा है। भारतीय ज्ञान परंपरा पुरातन युग से बहुत सम्द्ध रही है। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान और विदेशो से आ रही तथाकथित नवीन खोज जो हमारे ग्रन्थों में उल्लिखित है, भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्धशाली होने का प्रमाण है। बीते कुछ शताब्दियो से इस भूमि को इस प्रकार महसूस कराया जाता रहा है कि कभी यहां ज्ञान अंकुरित ही नहीं हुआ है। सहस्त्र वर्ष की दासता में हमारी सैकड़ों पीढ़ियों ने पीडा को झेलते हुए इस ज्ञान को संजोए रखा। परंतु समय के साथ इसकी उपादेयता क्षीण होती रही। इसलिए समय है भारत के ज्ञान वृक्ष की छाया में पोषित हो रहे इस विश्व को बताने का कि भारत का गुरूत्व अभी भी कायम है भारत का ज्ञान गंगा जल के समान है। जो निर्मल और अविराम है। मैकाले के मानस पुत्र प्रश्न उठाते हैं कि भारत ने विश्व को क्या दिया और यह बोध कराते हैं कि पाश्चात्य देशो ने ही भारत कों सब कुछ दिया है। भारत ने विश्व को ज्ञान प्रणाली दी, विज्ञान के अनेक आयामदिये। यह भारतीय ज्ञान प्रणाली के बारे में चिंता और चिंतन करने का समय है। इसकी उपादेयता हो जनमानस तक पहुंचाने के लिए पुरूषार्थ की आवश्यकता है।क्योंकि यह बात केवल कुछ पुरातन ज्ञान के बारे में नहीं है, यह बुद्धि आांतर्रिक सुरक्षा और राष्ट्रीय गौरव के बारे में है।, साथ ही यह बात भी विस्मृत न हो कि भारतीय ज्ञान परंपरा सत्य का अनुमोदन करती है

आधुनिक युग में डिप्रेशन, तनाव, इन्जाइटी व मेन्टल ट्रामा जैसे शब्दों का प्रयोग अत्यधिक मात्रा में बढ़ गया है । आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य जगत की जीवन शैली को अपनाने के कारण इन शब्दो को अपने जीवन में समाहित कर चुकी है किन्तु पुरातन भारत में इस प्रकार की मनोवृत्ति देखने को नहीं मिलती, इसयका कारण रहा 'भारतीय दर्शन'। अब यह हम सभी का कर्तव्य बनता है कि भारत वर्ष की अनमोल धरोहर, ज्ञान को सयंवर्धित करके रखें जिससे कि विश्व का कल्याण हो सके एवं भारत की आने वाली पीढ़ी भारत को हीन दृष्टि से न देख कर गौरव पूर्ण दृष्टि से देखे।

वैज्ञानिक अलबर्ट आइन्सटीन ने कहा है'' हम भारतीयों के बहुत ऋणी है जिन्होंने हमें गिनना सिखाया।, जिसके बिना कोई सार्थक वेज्ञानिक खोज नहीं हो सकती थीं''। पाश्चात्य जगत के वैज्ञानिक के कथन से यह सपष्ट होता है कि भारत वर्ष का योगदान सदैव ही अमूल्य रहा है और आधुनिक संदर्भ में इसकी उपादेयता सदैव अक्षुण्ण रहेगी।

निष्कर्षः—

प्राचीन भारत ने दर्शन, ध्वन्यात्मक अनुष्ठान, व्याकरण, खगोलविज्ञान, अर्थशास्त्र, सांख्य सिद्धांत, तर्क, जीवन विज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष एवं संगीत जैसे विभिन्न मानव कल्याणकारी क्षेत्रों में कीर्तिमान की स्थापना करके मानव जाति की उन्नति में अत्यधिक योगदान दिया है।

प्राचीन भारतीयों द्वारा अविस्कृत विचारों और तकनीकीयों का आधुनिक विज्ञान और पौद्योगिकी की मूलाधार को दृढ़ करने में अद्भुत योगदान रहा है। जबकि इन अभिनव योगदान को वर्तमान में कुछ तो अपनाया जा रहा है कुछ अभी भी अज्ञात है।

इस प्रकार हमारे भारत वर्ष ने विश्व को अनेक प्रकार से योगदान देकर लाभनवित किया है। भारत ने ही विश्व को बौद्ध, जैन और सिक्ख पंथ दिये। भारत ने विश्व को गुरू शिष्य परंपरा दी जिसके मायम से वर्षों तक अर्जित ज्ञान को आत्मसात और विश्लेषण कर नये ज्ञान को संष्लेषित किया गया।

निष्कर्षतः भारतीय ज्ञान परंपरा आज के परिदृश्य में भी लागू है, जो तनाव प्रबंधन स्थिरता आदि जैसे मुद्दों से निपटने कि लिए व्यावहारिक सुझाव देती है। यह ज्ञान का एक विशाल भण्डार प्रदान करती है। जिसयका उपयोग लोगों ,समुदायों और मानवता को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

अतः विश्व धरोहर के लिए इन समृद्ध विरासतों को न केवल भावी पीढ़ी के लिए पोषित और संरक्षित किया जाना चाहिए बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली के जरिए इन्हें बढ़ाना चाहिए और इन्हे नये उपयोग में भी लाना चाहिए।

उत्तम ज्ञान ही एक स्वस्थ समाज को उसके शीर्ष तक पहुंचाने में योगदान देती है। सभी योनी में मनुष्य को श्रेष्ठ कहा गया है । अतः श्रेष्ठों का कार्य भी उत्तम और कल्याणप्रद होना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथः—

1. पण्डित मधुसुदन ओझा, भारतवर्षः द इन्डियन नरेटिव ऐज टोल्ड इन इन्द्रविजयाह, रूपा 2017
2. नीतिशतकम्
3. मनुस्मृति
4. दर्शनकोश, प्रगति प्रकाशन, मास्को 1980, पृष्ठ 226,आई एस बी एन5—010009072
5. ईशोपनिषद
6. मिश्र ,जयशंकर : प्राचीन भारत का इतिहास पृ0 667
7. सत्यार्थ प्रकाश, किरण प्रकाशन 2015 आई एस बी एन 13:987—8189068783
8. पाणिनी कालीन भारतवर्ष पृ0 2 मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।